International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 08-11-2025, Accepted: 07-12-2025, Published: 22-12-2025
Volume 11, Issue 4, 2025, Page No. 150-151

प्रेमचंद और रूसी साहित्य: एक वैचारिक एवं सौंदर्यात्मक स्वीकृति का अध्ययन

प्रभात मिश्रा

शोध छात्र, हिन्दी विभाग, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

हिंदी साहित्य के युगप्रवर्तक कथाकार प्रेमचंद ने विश्व साहित्य का गहन अध्ययन किया था। उन्होंने मौलिक रचनाओं के साथ–साथ अनेक विदेशी साहित्यिक कृतियों का हिंदी में अनुवाद भी किया। यह अध्ययन विशेष रूप से रूसी साहित्य के प्रति प्रेमचंद के आकर्षण, उनके द्वारा किये गए रूसी अनुवादों तथा उनकी मौलिक रचनाओं में रूसी साहित्य की अवधारणाओं की स्वीकृति पर केंद्रित है। साथ ही, इस शोध पत्र द्वारा प्रेमचंद द्वारा अपनाई गई अनुवाद रणनीतियों को भी रेखांकित किया जाएगा। प्रेमचंद की रचनाधर्मिता पर रूसी साहित्य के प्रभाव एवं स्वीकृति को उजागर करना इस आलेख का मुख्य उद्देश्य है।

मूल शब्दः प्रेमचंद, अनुवाद, स्वीकृति, रूसी साहित्य, यथार्थवाद, आदर्शोन्मुख यथार्थवाद, सामाजिक न्याय

प्रस्तावना

मुंशी प्रेमचंद आधुनिक हिंदी कथा–साहित्य के स्तंभ माने जाते हैं। उनकी रचनाओं ने न केवल भारतीय पाठकों को, बल्कि विश्व साहित्य के दिग्गजों को भी प्रभावित किया है। प्रेमचंद का साहित्यिक संसार बेहद व्यापक था और वे विश्व भर के साहित्य से गहराई से परिचित थे। उन्होंने लियो टॉल्स्टॉय, मैक्सिम गोर्की, तुर्गनेव आदि रूसी साहित्यकारों को न केवल पढ़ा बल्कि उनकी कृतियों का हिंदी में अनुवाद भी किया। यह शोध पत्र प्रेमचंद पर रूसी साहित्य के वैचारिक एवं कलात्मक प्रभावों की पड़ताल करता है।

प्रेमचंद और रूसी साहित्य के महानायक

प्रेमचंद पर टॉल्स्टॉय के दर्शन और उनकी नैतिकता का गहरा प्रभाव देखा जा सकता है। टॉल्स्टॉय की तरह, प्रेमचंद ने भी सामाजिक अन्याय, जमींदारी प्रथा और किसानों के शोषण के विरुद्ध आवाज उठाई। उनकी कहानी 'कफन' और 'पूस की रात' में रूसी यथार्थवाद की स्पष्ट झलक मिलती है। गोर्की की रचनाओं से प्रेरित होकर उन्होंने समाज के निचले तबके के लोगों—मजदूरों, किसानों, स्त्रियों—को अपनी कहानियों का केंद्रीय पात्र बनाया।

अनुवादः एक सांस्कृतिक सेतु

प्रेमचंद ने रूसी साहित्य को हिंदी पाठकों तक पहुँचाने में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने गोर्की की प्रसिद्ध रचना 'मदर' सहित कई कहानियों का अनुवाद किया। उनकी अनुवाद रणनीति केवल भाषाई अनुवाद तक सीमित नहीं थी, बल्कि वे रूसी संदर्भों को भारतीय परिवेश में ढालकर प्रस्तुत करते थे, ताकि स्थानीय पाठक आसानी से उनसे जुड़ सकें। यह 'सांस्कृतिक अनुकूलन' की एक उत्कृष्ट मिसाल है।

वैचारिक साम्य

रूसी साहित्य की सामाजिक न्याय और समानता की चेतना प्रेमचंद के अपने 'सर्वजनिन साहित्य' के सिद्धांत से मेल खाती थी। दोनों ही साहित्य की इस भूमिका में विश्वास रखते थे कि वह केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का एक शक्तिशाली उपकरण है। प्रेमचंद का 'आदर्शोन्मुख यथार्थवाद' टॉल्स्टॉय के नैतिक दबाव और गोर्की के क्रांतिकारी आग्रह का समन्वित रूप लगता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः, यह कहा जा सकता है कि रूसी साहित्य ने प्रेमचंद की रचनात्मकता को गहरे स्तर पर प्रभावित किया। इसने न केवल उनके कथा–शिल्प को समृद्ध किया बल्कि उनकी वैचारिक पृष्ठभूमि को भी मजबूती प्रदान की। अनुवाद के माध्यम से उन्होंने न केवल हिंदी साहित्य को एक नया फलक दिया, बल्कि भारत और रूस के बीच एक सांस्कृतिक सेतु का निर्माण भी किया। प्रेमचंद का साहित्य इस बात का जीवंत प्रमाण है कि महान साहित्य कभी सीमाओं में नहीं बँधता।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रेमचंद. (2002). प्रेमचंद रचनावली (खंड 1–8). दिल्ली: साहित्य अकादमी.
2. अमृत राय. (1991). प्रेमचंद: एक जीवनी. नई दिल्ली: हार्परकॉलिंस.

3. गोर्की, म. (1978). मदर. (प्रेमचंद, अनु.). दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
4. तॉल्स्तोय, ले. (1982). ईश्वर सत्य देखता है, पर इंतजार करता है. In मानसरोवर (भाग 6). (प्रेमचंद, अनु.). इलाहाबाद: सरस्वती प्रेस.
5. द्विवेदी, र. (2015). प्रेमचंद का अनुवाद साहित्य. दिल्ली: वाणी प्रकाशन.